होली खेले मुनिराज | By Shubham Sharma

होली खेले मुनिराज शिखरवन मे।।
होली खेले मुनिराज शिखरवन में।।
थे अकेले वन में मधुवन में।।
थे अकेले वन में मधुवन में।।

मधुवन में आज मची रे होली मधुवन में
होली खेले मुनिराज शिखरवन में।।
थे अकेले वन में मधुवन में।।

चैतन्य गुफा में मुनिवर बसते अनंत गुणों में केली करते
एक ही ध्यान रमाये वन में मधुवन में
होली खेले मुनिराज शिखरवन में।।
थे अकेले वन में मधुवन मे।।

ध्रुव धाम ध्येय की धुनि लगाई ज्ञान की धधकती अग्नि जलाई
भाव का ईंधन जलावे वन में मधुवन में
होली खेले मुनिराज शिखरवन में।।
थे अकेले वन में मधुवन मे।।

अक्षय घट भरपूर हमारा अंदर बहती अमृत धारा
पतली धार न भाई मन में मधुवन में
होली खेले मुनिराज शिखरवन में।।
थे अकेले वन में मधुवन मे।।

हमें तो पूर्ण दशा ही चाहिए सादी अनंत का आनंद लहिये
निर्मल भाव न भाई मन में मधुवन में
होली खेले मुनिराज शिखरवन में।।
थे अकेले वन में मधुवन मे।।

पिता झलक जो पुत्र में दिखती जिनेन्द्र झलक मुनिराज चमकती
श्रेणी मांडी पालक छिन में मधुवन में
होली खेले मुनिराज शिखरवन में।।
थे अकेले वन में मधुवन मे।।

नेमिनाथ गिरनार में देखो शत्रुंजय पर पांडव देखो
केवल ज्ञान लियो है छिन में मधुवन में
होली खेले मुनिराज शिखरवन में।।
थे अकेले वन में मधुवन मे।।

बार बार वंदन हम करते शीश चरण में उनके धरते
भव से पार लगाए वन में मधुवन में
होली खेले मुनिराज शिखरवन में।।
थे अकेले वन में मधुवन मे।।

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b9%e0%a5%8b%e0%a4%b2%e0%a5%80-%e0%a4%96%e0%a5%87%e0%a4%b2%e0%a5%87-%e0%a4%ae%e0%a5%81%e0%a4%a8%e0%a4%bf%e0%a4%b0%e0%a4%be%e0%a4%9c-by-shubham-sharma/